सृजन धारा

Vol-1

सृजन धारा

Vol-1

संपादकगण

डॉ. दिनेश कुमार
सहायक आचार्य (भूगोल)
टांटिया विश्वविद्यालय
श्रीगंगानगर (राज.)

डॉ. विनोद खुड़ीवाल
सहायक आचार्य (अंग्रेजी)
राजकीय नेहरू मेमो. महाविद्यालय
हनुमानगढ (राज.)

डॉ. सुरेन्द्र कुमार
सहायक आचार्य (हिन्दी)
के.आर. कन्या महाविद्यालय
संगरिया (राज.)

2025

Siddhi Vinayak Publications

प्रकाशक

सिद्धि विनायक पब्लिकेशन्स

कुलचन्द्र, हनुमानगढ़ (राजस्थान) 335063
94611-09470, 83063-09470
publicationssiddhivinayak@gmail.com

ISBN : 978-81-982071-7-3

© डॉ. दिनेश कुमार एवं प्रकाशक

पुस्तक शृंखला : सृजन धारा
खंड : Vol-1
प्रकाशन तिथि : 30 जून 2025

मूल्य : ₹ 365.00

शब्द संयोजक एवं डिजाइन : कमल जीत सिंह (तकनीकी सहायक)

मुद्रक : Ican Technosolutions

वैधानिक चेतावनी / Legal Disclaimer

- इस पुस्तक के प्रकाशन में पूर्ण सावधानी बरती गई है, तथापि यदि इसमें किसी प्रकार की त्रुटि, कमी अथवा लोप रह गया हो तो उसके लिए संपादकगण, प्रकाशक, मुद्रक या वितरक उत्तरदायी नहीं होंगे।
- पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ— कविताएँ (गीत, लोकगीत, ग़ज़ल, मुक्तक आदि), कहानियाँ (लघुकथा, लघु उपन्यास आदि), निबंध (सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि) अथवा अन्य रचनात्मक विधाएँ (जैसे संवाद, विचार, यात्रा-वृत्तांत आदि) संबंधित लेखकों/रचनाकारों के निजी विचार हैं। इससे संपादकगण या प्रकाशक की सहमति अनिवार्य रूप से अभिप्रेत नहीं है।
- पुस्तक के किसी भी भाग का पुनर्प्रकाशन, छायाप्रति (फोटोकॉपी), स्कैनिंग अथवा किसी भी अन्य माध्यम से पुनरुत्पादन, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना, कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत दंडनीय अपराध की श्रेणी में आता है।
- यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इसे, या इसके किसी भी भाग को किसी भी रूप में पुन: प्रकाशित, वितरित अथवा किसी प्रकार से व्यावसायिक उपयोग नहीं किया जाएगा। इस नियम का उल्लंघन करने पर संबंधित व्यक्ति/संस्था के विरुद्ध विधिसम्मत कानूनी कार्यवाही की जाएगी।
- पुस्तक से संबंधित किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र केवल हनुमानगढ़ (राजस्थान) होगा।

क्र.सं.	शीर्षक	पृ.सं.
	संपादकीय वक्तव्य एवं आभार	(xi)
	प्रस्तावना	(xii)
	प्राक्कथन	(xiii)
1	**ग्रामोत्थान के अग्रदूत - स्वामी केशवानन्द** -डॉ. दिनेश कुमार जाखड़	1
2	**स्वप्न** -कमल जीत सिंह	3
3	**सृजन धारा : एक नई दिशा** -डॉ. भावना उपाध्याय, 'गीतांजलि'	5
4	**पगडंडी से राजमार्ग तक** -डॉ. अजय तिवारी	6
5	**हम छोड़ आए घर** -अल्का जैन	8
6	**अंतरिक्ष परी सुनीता विलियम्स** -रोमा चांदवानी 'आशा'	9
7	**झारखंड गीत** -डॉ. राम कुमार तिवारी	10
8	**मकीं नहीं मेहमां है तू** -डॉ. एन. आर. कस्वाँ 'बशर'	12
9	**टिटहरी** -डॉ. आर्ची आशीष राव	13
10	**बेटियाँ – नन्हीं परी, बड़ी उड़ान** -दिया	15
11	**धैर्य** -ज्योति चारण	16
12	**यह है अनोखी दुनिया** -डॉ. माधवी आचार्य	17
13	**ना आदर्श, ना उपदेश** -के.वी. सिंह	19

14	**पूछ रही है पांचाली** -रितु बेरवाल	20
15	**जागते रहे रात ही से** -पुनिता माहेश्वरी	22
16	**अश्रु की भाषा** -ESWARI.A	23
17	**उम्र जब ढलने लगे** -डा. रिंकू सुखवाल	24
18	**जब कुदरत का मौन खुलता है....** -चिरंजीव सैन	26
19	**सफ़रनामा** -डा. राकेश कुमार 'राकेश'	28
20	**सकारात्मक सोच** -रजत त्यागी	31
21	**पौधा और बादल** -डॉ. गजेंद्र सिंह राजपूत	32
22	**माँ** -सुश्री रेखा कुमारी	34
23	**धर्म नहीं, इंसानियत जिंदा रहे** -डॉ. सुरभि दोसी	36
24	**The Ray of Hope** -Dr. Richa Biswal	39
25	**जौहर की पथ प्रदर्शिका – वीरांगना रानीबाई** -रोमा चांदवानी 'आशा'	44
26	**जो कभी रो दूं तेरे सामने** -सुश्री कुमुद	46
27	**वर्तमान में बच्चों में घटते नैतिक मूल्य** -डॉ.सुमन लता यादव	47
28	**बदलता पर्यावरण और मानवीय क्रियाकलाप** -महेंद्र कुमार निठारवाल	51

29	**टीस** -डॉ. रिंकू सुखवाल	53
30	**हमें पसंद नहीं है** -सीमा रानी	54
31	**आसक्ति-विरक्ति** -मनीष सिहाग	58
32	**सतत् विकास हेतु महिला सशक्तिकरण में सावित्रीबाई फुले के योगदान का अध्ययन** -सुश्री रेखा कुमारी	59
33	**प्रेरणादायक विचार** -सुश्री सरिता	62
34	**कुछ लोग** -दीप्ति श्रीवास्तव	64
35	**मैं पत्थर बन जाऊं** -राय झोरड़	65
36	**सही-गलत** -डॉ. शिबा	66
37	**पराया घर** -डॉ. इंदु पांचाल	67
38	**उम्र का चश्मा** -डॉ. कामना भटनागर	69
39	**गैजेट की दुनिया में बच्चों में संवेदनाओं को जीवित रखना एक बड़ी चुनौती** -कपिल करवा	70
40	**माँ भारती** -Mr. Samlesh Potai	72
41	**युवा और नशा** -कंचन	74
42	**सवाल (अेक)** -डॉ. गौरीशंकर निमिवाळ	75

43	**सवाल (दो)** -डॉ. गौरीशंकर निमिवाळ	76
44	**जवानी** -Dr. Zargul Niazi	77
45	**मेरा अर्जुन धीरे धीरे** -डॉ. भारती पांचाल	78
46	**मेरी छोटी सी दुनिया** -नम्रता पांचाल	79
47	**कुछ रह तो नहीं गया!** -डॉ. धर्माराम सहारण	80
48	**गर्मी में बारिश** -साहिल जोशी	83
49	**हाँ, मैं कुछ करने आया हूँ** -पंकज मिश्रा	84
50	**सपनों की उड़ान** -कीर्ति कंवर	86
51	**ये धरती वीर सपूतों की** -तनुष्का	87
52	**ज़िद्द, जज़्बात और जहर** -मोहन लाल सुथार	88
53	**बुलंद तेरा इरादा** -पूनम	89
54	**वर्तमान परिवेश में संस्कृत का महत्त्व** -डॉ. प्रियंका खण्डेलवाल	90
55	**धीरे-धीरे सूरज आया** -एम. एल. महरिया	93
56	**दहेज के प्रति सोच : युवा पीढ़ी** -राकेश कुमार	94
57	**ਸਿਆਣਿਆਂ ਦੇ ਬੋਲ** -ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ (ਗੁਰੀ ਧਾਲੀਵਾਲ)	96

58	**क्यूं?** -मोहन लाल सुथार	99
59	**सत्य की राह** -राजविन्द्र सिंह	100
60	**सम्मान का सूर्य** -ज्योति चारण	101
61	**क्या फिर भी मैं गांधी हूँ?** -चिरंजीव सैन	102
62	**The Last Letter from Gulmohar Lane** -Dr. Richa Biswal	104
63	**खुद का खुद से संघर्ष** -सीमा रानी	110
64	**ताश की बाजी (ब्रह्मज्ञान)** -मरहूम रमजान खां	111
65	**अबोध** -मनीष सिहाग	113
66	**बचपन** -Dr. Zargul Niazi	120
67	**निर्भया 2.0** -डॉ. भारती पांचाल	121
68	**एक जिंदगी काफी नहीं** -नम्रता पांचाल	122
69	**विचारधारा** -एम. एल. महरिया	123
70	**युवा : सफलता और संगति** -राकेश कुमार	125
71	**अल्फाज-ए-मोहब्बत** -K. Deep	127
72	**बलात्कार** -डॉ. प्रियंका चौबीसा	128

73	**पुस्तकों से प्रेम** -अशोक नेहरा	129
74	**राजस्थानी लोकगीत एवं भजन**	130
	74.1 विनायक -आरती	130
	74.2 बधावा -निर्मला	132
	74.3 भात का गीत -पूनम	134
	74.4 सावन -पलका	135
	74.5 बन्नी गीत -सुमन	136
	74.6 पीतळ गी टोकळी -रमनदीप कौर	137
	74.7 विवाह थापा गीत -करुणा	138

संपादकीय वक्तव्य एवं आभार

'सृजन धारा' : कलमकारों की समवेत स्वरधारा

साहित्य न केवल समाज का दर्पण होता है, बल्कि वह उसके विचारों, भावनाओं और संस्कारों का संवाहक भी होता है। इसी विश्वास को आधार बनाते हुए हमने 'सृजन धारा (Vol-1) का प्रकाशन आरंभ किया है। यह एक ऐसा साझा मंच, जो समर्पित है उन सभी लेखकों, कवियों और चिंतकों को जो अपनी लेखनी के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना चाहते हैं।

इस संकलन में देशभर के विविध भाषा-भाषी, पीढ़ियों और क्षेत्रों से जुड़े रचनाकारों ने अपनी मौलिक रचनाओं से इसे समृद्ध किया है। यह पुस्तक किसी व्यावसायिक उद्देश्य से नहीं, बल्कि निष्कलंक साहित्य सेवा के संकल्प से प्रकाशित की जा रही है। आप सभी साहित्य प्रेमियों के विश्वास, सहयोग और रचनात्मक योगदान ने ही इसे संभव बनाया।

हम उन सभी प्रतिभागियों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हैं जिनकी लेखनी इस संग्रह का हिस्सा बनी। आप सभी का साहित्यिक समर्पण आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

विशेष रूप से धन्यवाद उन साहित्य साधकों को जो इस मंच से जुड़कर हमारे उद्देश्य को और अधिक बल दे रहे हैं। हमारा यह प्रयास निरंतर जारी रहेगा और हम आने वाले संस्करणों में और अधिक सृजनशीलता के साथ लौटेंगे।

आप सभी के सहयोग से ही 'सृजन धारा' प्रवाहित हो रही है... और आगे भी होती रहेगी।

आपके शब्दों की प्रतीक्षा में...

डॉ. दिनेश कुमार

प्रस्तावना

'सृजन धारा' के प्रथम संस्करण का यह प्रकाशन उन साहित्य प्रेमियों और रचनाकारों को समर्पित है, जो शब्दों से विचारों की दीपशिखा जलाते हैं।

वर्तमान सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिप्रेक्ष्य में जब अभिव्यक्ति सीमित हो रही है, ऐसे में यह मंच उन सृजनधर्मियों को एक साझा आकाश प्रदान करता है जो अपने भीतर पल रही रचनात्मकता को साझा करना चाहते हैं।

इस प्रयास में भाषा, शैली, भाव और विषयवस्तु की विविधता को सम्मानपूर्वक स्थान दिया गया है, ताकि पाठक और लेखक दोनों आत्मसंतुष्टि का अनुभव कर सकें।

'सृजन धारा' न लाभ की आकांक्षा से जुड़ा है, न ही यश की लालसा से, यह तो मात्र एक विचार है, जो साझा भावनाओं और सहयोग से उत्पन्न हुआ है।

हम आशा करते हैं कि यह यात्रा रचनाशीलता और साहित्यिक बंधुत्व के साथ निरंतर गतिमान रहेगी।

दिनांक: 30 जून 2025

संपादकगण:

डॉ. दिनेश कुमार

डॉ. विनोद खुड़ीवाल

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

प्राक्कथन

"किसी रचना को जन्म देने से बड़ा सुख, उसे पाठकों तक पहुँचाना होता है।"

'सृजन धारा' के इस प्रथम संस्करण की रचना प्रक्रिया मेरे लिए केवल संपादन नहीं, एक साहित्यिक यात्रा रही है। इस यात्रा में देशभर के कोने-कोने से मिले सहयोग, विश्वास और रचनाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि साहित्य अब भी जीवित है- और उसे मंच की आवश्यकता है, सम्मान की प्यास है, और पाठकों से संवाद की इच्छा है।

यह पुस्तक केवल रचनाओं का संग्रह नहीं, एक साहित्यिक आंदोलन का आरंभ है जिसमें नए और अनुभवी लेखकों की सम्मिलित भागीदारी है।

हमने रचनाओं के चयन में मौलिकता, भाषा की सादगी, विचारों की स्पष्टता और सामाजिक उपयोगिता को प्राथमिकता दी है। जो रचनाएँ पुस्तक में स्थान नहीं पा सकीं, वे भी हमारे लिए उतनी ही महत्वपूर्ण हैं और भविष्य के संस्करणों में सम्मिलन हेतु संरक्षित रहेंगी।

यह मंच निरंतर सक्रिय रहेगा जब तक साहित्य और समाज के बीच की यह धारा निर्बाध बहती रहे।

संपादकगण:

डॉ. दिनेश कुमार

डॉ. विनोद खुड़ीवाल

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

“

कलम चलती है तो
केवल स्याही नहीं,
एक विचार बहता है...

”